नृत्य भरतनाट्यम कोड 057
अंकन योजना
कक्षा -XII (2025-26)

समय – 2 घंटे **अधिकतम अंक – 30**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
- इस प्रश्न पत्र में कुल 15 प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प शामिल हैं।
- **खंड- क** में 8 प्रश्न बहुविकल्पीय हैं, जिनमें प्रत्येक 1 अंक का है।
- **खंड- ख** में 5 प्रश्न छोटे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 2 अंक का है।
- **खंड- ग** में 2 प्रश्न लंबे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 6 अंक का है।

प्रश्न	खंड-क	अंक
1.	b	1
2.	a	1
3.	d	1
4.	a	1
5.	b	1
6.	c	1
7.	b	1
8.	b	1
	खंड-ख	
9.	सप्त ताल और उनके तालांग • ध्रव ताल – IOII • मत्य ताल – IOI • रूपक ताल – OI • झम्प ताल – IUO • त्रिपुट ताल – IOO • अट्ट ताल – IIOO • एक ताल – I **या**	2

	नृत्त "भावाभिनयहीनं तु नृत्तमित्यभिधीयते।" नृत्त वह नृत्य है जो किसी भावनात्मक स्थिति से संबंधित नहीं होता। **नाट्य** "नाट्यं तन्नाटकम् चैव पूज्यं पूर्वकथायुतम्।" किसी पौराणिक एवं प्राचीन चरित पर आधारित ऐसी कथा के अभिनय को नाट्य कहा जाता है जो लोक सम्पूजित हो।	
10.	**अरैमंडी** यह भरतनाट्यम नृत्य का मूल आसन है। इसमें दोनों पैरों पर खड़े होते समय छाती ऊपर की ओर होती है, रीढ़ सीधी होती है, घुटने मुड़े होते हैं और पैरों की उंगलियां बाहर की ओर होती हैं। इसे "आयत मंडल" भी कहा जाता है। **मुरुमंडी** इसमें नर्तकी अपने पैर की उंगलियों पर बैठती है, एड़ियां ऊपर उठी होती हैं और दोनों घुटने बाहर की ओर खिंचे होते हैं। छाती ऊपर की ओर और रीढ़ सीधी होती है। इसे "मंडी" भी कहा जाता है। **या** **अडवु** अडवु भरतनाट्यम नृत्य का आधार है। यह भरतनाट्यम नृत्य के अक्षर हैं और नृत्य प्रशिक्षण की शुरुआत में ही सिखाए जाते हैं। अडवु पैरों के कार्य और हाथों की गति का एक व्यवस्थित संयोजन है, जो ताल के अनुरूप होता है। यदि अडवुओं का अभ्यास सही ढंग से नहीं किया जाता है, तो भरतनाट्यम का संपूर्ण ढांचा कमजोर हो सकता है। जब कई अडवुओं को एक साथ किया जाता है, तो वे कोरवई बनाते हैं। तंजावुर भाइयों ने इन अडवुओं को दस प्रकारों में विभाजित किया है प्रत्येक प्रकार में कई विविधताएँ होती हैं। **जाति** यह एक बहुत महत्वपूर्ण कारक है जो लघु का मूल्य निर्धारित करता है। जाति के पाँच प्रकार हैं: 1. तिस्र - 3 मात्राएँ 2. चतुरस्र - 4 मात्राएँ 3. खंड - 5 मात्राएँ 4. मिश्र - 7 मात्राएँ 5. संकीर्ण - 9 मात्राएँ	2

11.	**संगीत** "गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते" गीत, वाद्य और नृत्य – ये तीनों मिलकर संगीत कहलाते हैं। **या** **लय** लय संगीत और नृत्य की गति या चाल को दर्शाता है। यह दो मात्राओं (बीट्स) के बीच के समय अंतराल को निर्धारित करता है। ताल का कोई निश्चित गति या समय नहीं होता, लेकिन इसे विभिन्न गति में बजाया जा सकता है। इसे तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है: • विलंबित या धीमी गति • मध्य या मध्यम गति • द्रुत या तेज गति	2
12.	**आंगिक अभिनय** यह शारीरिक प्रस्तुति को संदर्भित करता है। यह शरीर के अंगों या अंगों की गति के माध्यम से अभिव्यक्ति से संबंधित है। इसमें छह मुख्य अंग हैं - शिर (सिर), हस्त (हाथ), वक्ष (छाती), पार्श्व (पक्ष), कटि (कमर), पद (पैर)। इसे शरीरज भी कहा जाता है। इन अंगों को दस प्रत्यंगों (शरीर के छोटे अंगों) में उप-विभाजित किया गया है - स्कंध (कंधा), बाहु (भुजा), पीठ (पीठ), उदर (पेट), जंघा (जांघें), ऊरु (जांघ), मणिबंध (कलाई), कोहनी, जानु (घुटना), ग्रीवा (गर्दन)। बारह उपांगों को मुखजा भी कहा जाता है - दृष्टि (दृष्टि), भृकुटि (भौंह), पुट (पलक), तारा (नेत्रगोलक), कपोल (गाल), नासिका (नाक), हनु (जबड़ा), अधर (होठ), दशन (दांत), जीभ, चिबुक (ठोड़ी), और वदन (मुख)। आंगिक अभिनय पदार्थ अभिनय (गीत के प्रत्येक शब्द को हावभाव और अभिव्यक्तियों के साथ अभिनय करना) और वाक्यार्थ अभिनय (एक पूरे श्लोक या वाक्य को व्यक्त करना) दोनों बनाता है। **या** **मंडल पाद** "स्थानकम् च आयतालीढं प्रेंखन प्रेरितानि च ।। प्रत्यालिढं स्वस्तिकम् च मोटितं समसूचिका । पार्श्वसूचिति च दश मंडलानीरितानिः ।।" अभिनय दर्पण ने नृत्य और नाटकीय प्रस्तुति के लिए साथ ही मूर्तिकला निर्माण के लिए दस मंडलों का उल्लेख किया है - स्थानक, आयत, आलिढ, प्रेंखन, प्रेरित, प्रत्यालिढ, स्वस्तिक, मोटित, समसूचि और पार्श्वसूचि।	2

13.	**लोकधर्मी और नाट्यधर्मी** भारतीय शास्त्रीय प्रदर्शन कलाओं में अभिव्यक्ति के दो विशिष्ट रूप हैं। **लोकधर्मी** यह दैनिक जीवन और प्राकृतिक व्यवहार का यथार्थवादी प्रस्तुतिकरण है। **नाट्यधर्मी** यह शास्त्रीय और रंगमंचीय प्रस्तुति है जो संहिताबद्ध तकनीकों का उपयोग करता है। सार में, लोकधर्मी यथार्थवाद पर केंद्रित है, जबकि नाट्यधर्मी अमूर्तता और कलात्मक परिष्कार पर जोर देता है। दोनों भारतीय प्रदर्शन कलाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे संबंधित कहानी और सौंदर्य अभिव्यक्ति के बीच संतुलन बनता है। **या** **आठ रस और उनके स्थायी भाव** 1. शृंगार (रोमांस/सौंदर्य) - रति (प्रेम) 2. हास्य (हँसी) - हास (मज़ा) 3. करुणा (दया) - शोक (दुःख) 4. रौद्र (क्रोध) - क्रोध (गुस्सा) 5. वीर (साहस) - उत्साह (उत्साह) 6. भयानक (डर) - भय (डर) 7. वीभत्स (घृणा) - जुगुप्सा (घृणा) 8. अद्भुत (आश्चर्य) - विस्मय (आश्चर्य)	2
	खंड-ग	
14.	टी. बालासरस्वती (1918-1984) : वह एक प्रख्यात भरतनाट्यम नृत्यांगना थीं, जो अपनी अद्वितीय कला और शास्त्रीय नृत्य रूप के प्रति समर्पण के लिए जानी जाती हैं। वह एक पारंपरिक संगीतज्ञ और नर्तक परिवार से थीं और उन्होंने भरतनाट्यम को पुनर्जीवित और लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जब यह नृत्य रूप संकट के दौर से गुजर रहा था। उनका नृत्य शैली अभिनय (व्यक्तिगत कहानी कहने) पर आधारित थी, जिसमें चेहरे की अभिव्यक्तियाँ और मुद्राओं के माध्यम से कविता और भावनाओं को जीवंत किया जाता था। बालासरस्वती की प्रस्तुतियाँ गहरे परंपरा से जुड़ी हुई थीं और भरतनाट्यम की आध्यात्मिक सार्थकता का उत्सव मनाती थीं। उन्हें विशेष रूप से पदम् और जावली के प्रदर्शन के लिए सराहा गया, जहाँ वह सूक्ष्म भावनाओं को व्यक्त करने की	6

	अपनी क्षमता के लिए बेजोड़ मानी जाती थीं। उनके योगदानों के कारण उन्हें पद्म भूषण और पद्म विभूषण जैसे कई सम्मान प्राप्त हुए। उनकी धरोहर आज भी नर्तकों की पीढ़ियों को प्रेरित करती है, क्योंकि उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि भरतनाट्यम केवल एक कला रूप नहीं है, बल्कि यह गहरे अभिव्यक्ति और समर्पण का एक माध्यम है। **या** **भ्रमरी पद -** "भ्रमर्या लक्षाणान्यत्र वक्ष्ये लक्षाणभेदतः ।। उत्प्लुतभ्रमरी चक्रभ्रमरी गरूडाभिधा । तथैकपादभ्रमरीकुंचितभ्रमरी तथा ।। आकाशभ्रमरी चैव तथांगभ्रमरीति च । भ्रमर्यः सप्त विज्ञेय नाट्यशास्त्रविशारदैः ।।" • अभिनय दर्पण में नृत्य और नाट्य प्रस्तुति के लिए सात भ्रमरियों का उल्लेख किया गया है - उत्प्लुता, चक्र, गरुड़ा, एकपाद, कुंचित, आकाश और अंग। **उत्प्लवण पद -** "अथोउत्प्लवनभेदानां लक्षणं परिकथ्यते ।। अलगं कर्तरी वाअश्वोत्प्लवनं मोटितं तथा । कृपालागमिति ख्यातं पंचघोत्प्लवनं बुद्धैः ।।" अभिनय दर्पण में नृत्य और नाट्य प्रस्तुति के लिए पाँच उत्प्लवनों का उल्लेख किया गया है - अलग, कर्तरी, अश्व, मोटित और कृपालग।	
15.	**ताण्डव :** उद्धत (उत्साही) - यह शिव द्वारा किया गया नृत्य है, जो केवल नृत्त है, जिसमें अभिनय का कोई तत्व नहीं होता। यह नृत्य उत्साही प्रकार का होता है और विभिन्न तालों में प्रेरक संगीत के साथ किया जाता है। इसमें गति तेज और आक्रामक होती है, और यह वीर और भयानक रसों को उत्पन्न करता है। यह एक योद्धाओं का नृत्य है, जो केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। इसमें 108 कराणों और 32 अंगहराओं का समावेश होता है, जो नृत्य का एक अभिन्न हिस्सा होते हैं। यह नृत्य पंच प्रमुख अभिव्यक्ति (सृष्टि, पालन, माया, संहार और मोक्ष) के चित्रात्मक रूप को दर्शाता है, जो शाश्वत ऊर्जा का प्रतीक होते हैं। **लास्य :** ललिता (कोमल) गति - यह शिव द्वारा पार्वती को सिखाया गया था और पार्वती द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। पार्वती का नृत्य 'सुकुमार' (लास्य) के रूप में	6

प्रसिद्ध है। यह नृत्य शैली महिला नृत्य शैली है, जो सुंदरता और लावण्य से भरी होती है। इसके कोमल और मनमोहक गति के साथ श्रृंगार रस का उभार होता है। यह गति में कोमल और अभिव्यक्तियों में श्रृंगारी होती है।

या

पारंपरिक भरतनाट्यम पोशाक :

♣ यह तमिल हिंदू दुल्हन की पोशाक के समान होती है।

♣ यह एक कस्टम-मेड साड़ी होती है, जो विशेष रूप से 5 पल्ली में सिला हुआ कपड़ा होता है जो कमर से नीचे की ओर सामने गिरता है।

♣ पल्ली (थलाइप्पू) जो सामने होती है, पोशाक को बहुत ही समृद्ध और रंगीन बनाती है।

♣ छोटे बच्चों के लिए एक ब्लाउज़ हो सकता है जिसमें सामने एक छोटी प्लीट होती है।

♣ ऊपरी हिस्सा 'धावनी' कहलाता है।

♣ स्कर्ट पोशाक बहुत आरामदायक और पहनने में आसान होती है।

♣ भरतनाट्यम की महिला पोशाक में दो सामान्य रूप होते हैं: स्कर्ट (साड़ी) शैली या पजामा शैली।